VIII मुद्रा प्रबंध

वर्ष 2015-16 के दौरान लेनदेन के नकदी-रहित माध्यमों के बढ़ते हुए चलन के बावजूद बैंकनोटों और सिक्कों की मांग अधिक बनी रही। रिजर्व बैंक ने केंद्र सरकार के साथ निकट समन्वय करते हुए बैंकनोटों की नई श्रृंखला के प्रचलन की प्रक्रिया आरंभ की, जिसमें अति उत्कृष्ट सुरक्षा फीचर्स रखे गए ताकि जालसाजी से बचाव के लिए उच्चतर स्तर रखे जा सकें। बैंकनोटों के उत्पादन का स्वदेशीकरण करने के लिए भी अविरत प्रयास किए गए।

मुद्रा की प्रवृत्तियां

परिचालनगत बैंक नोट

VIII.1 मार्च 2016 के अंत की स्थिति के अनुसार परिचालनगत बैंकनोटों का मूल्य ₹16,415 बिलियन था, जो 2014-15 के 11.4 प्रतिशत की तुलना में 14.9 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्शाता है। वर्ष 2014-15 में बैंकनोटों की मात्रा में हुई 8.1 प्रतिशत की बढ़ोतरी की तुलना में इस वर्ष 8.0 प्रतिशत की बढ़ोतरी रही। मूल्य की दृष्टि से ₹500 और ₹1,000 के बैंकनोटों का सम्मिलित मूल्य परिचालनगत बैंकनोटों के कुल मूल्य का 86.4 प्रतिशत रहा; मात्रा की दृष्टि से परिचालनगत कुल बैंकनोटों में 53.0 प्रतिशत हिस्सा ₹10 और ₹100 के बैंकनोटों का रहा (सारणीVIII.1)।

सारणी VIII.1 : परिचालनगत बैंक नोट

मूल्यवर्ग (₹)	मात्रा (मिलियन नग)			मूल्य (₹ बिलियन)		
	मार्च-14	मार्च-15	मार्च-16	मार्च-14	मार्च-15	मार्च-16
1	2	3	4	5	6	7
2 और 5	11,698	11,672	11,626	46	46	45
	(15.1)	(13.9)	(12.9)	(0.4)	(0.3)	(0.3)
10	26,648	30,304	32,015	266	303	320
	(34.5)	(36.3)	(35.5)	(2.1)	(2.1)	(1.9)
20	4,285	4,350	4,924	86	87	98
	(5.5)	(5.2)	(5.4)	(0.7)	(0.6)	(0.6)
50	3,448	3,487	3,890	172	174	194
	(4.5)	(4.2)	(4.3)	(1.3)	(1.2)	(1.2)
100	14,765	15,026	15,778	1,476	1,503	1,578
	(19.1)	(18.0)	(17.5)	(11.5)	(10.5)	(9.6)
500	11,405	13,128	15,707	5,702	6,564	7,854
	(14.7)	(15.7)	(17.4)	(44.4)	(46.0)	(47.8)
1,000	5,081	5,612	6,326	5,081	5,612	6,326
	(6.6)	(6.7)	(7.0)	(39.6)	(39.3)	(38.6)
कुल	**77,330**	**83,579**	**90,266**	**12,829**	**14,289**	**16,415**

टिप्पणी : कोष्ठकों में दिए गए आंकड़े कुल में प्रतिशत हिस्सा दर्शाते हैं।

परिचालनगत सिक्के

VIII.2 वर्ष 2015-16 में परिचालनगत सिक्कों के कुल मूल्य में 12.4 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई, जबकि विगत वर्ष में यह बढ़ोतरी 12.1 प्रतिशत की थी, मात्रा की दृष्टि से, यह बढ़ोतरी 8.2 प्रतिशत की थी जो पिछले वर्ष की (वर्ष 2014-15 में 8 प्रतिशत) तुलना में मामूली सी अधिक थी। मात्रा की दृष्टि से ₹1 और ₹2 के सिक्कों की सम्मिलित मात्रा परिचालनगत कुल सिक्कों का लगभग 70 प्रतिशत रही। मूल्य की दृष्टि से ₹2 और ₹5 के सिक्कों का सम्मिलित मूल्य कुल का 59 प्रतिशत था (सारणीVIII.2)।

सारणी VIII.2: परिचालनगत सिक्के

मूल्यवर्ग (₹)	मात्रा (मिलियन नग)			मूल्य (₹ बिलियन)		
	मार्च-14	मार्च-15	मार्च-16	मार्च-14	मार्च-15	मार्च-16
1	2	3	4	5	6	7
छोटे सिक्के	14,788	14,788	14,788	7	7	7
	(16.1)	(14.9)	(13.8)	(4.1)	(3.6)	(3.2)
1	38,424	41,627	44,876	38	42	45
	(41.9)	(42.1)	(41.9)	(21.9)	(21.7)	(20.6)
2	24,823	27,038	29,632	50	54	59
	(27.1)	(27.3)	(27.7)	(28.9)	(27.8)	(27.1)
5	11,577	12,761	14,089	58	64	70
	(12.7)	(12.9)	(13.2)	(33.5)	(33.0)	(32.1)
10	2,017	2,750	3,703	20	27	37
	(2.2)	(2.8)	(3.4)	(11.6)	(13.9)	(17.0)
कुल	**91,629**	**98,964**	**107,088**	**173**	**194**	**218**

टिप्पणी : कोष्ठकों में दिए गए आंकड़े कुल में प्रतिशत हिस्सा दर्शाते हैं।

मुद्रा प्रबंधन संबंधी संरचना (सीएमए)

VIII.3 संपूर्ण भारत में मुद्रा प्रबंधन संबंधी संरचना में 19 निर्गम कार्यालयों, वाणिज्य, सहकारी और क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों में 4,075 करेन्सी चेस्टों (उप-कोषागार कार्यालयों और कोच्चि में रिज़र्व बैंक के करेन्सी चेस्ट सहित) और 3,746 छोटे सिक्कों के डिपो शामिल हैं (सारणी VIII.3)।

मुद्रा प्रबन्धन इन्फ्रास्ट्रक्चर को मजबूत बनाना

VIII.4 प्रौद्योगिकी का सहारा लेते हुए करेन्सी के वितरण को मजबूत बनाने के लिए रिज़र्व बैंक द्वारा बृहत-करेन्सी चेस्ट (एमसीसी) के हब और स्पोक मॉडल पर विचार किया जा रहा है जो निर्धारित क्षेत्र (एक जिले के तौर पर) में करेन्सी की जरूरतों को पूरा करेगा। इन बृहत-करेन्सी चेस्टों को सीधे ही बैंकनोट मुद्रण प्रेस से नए नोट प्राप्त होंगे, जिनका वितरण बैंकों की शाखाओं में किया जाएगा और नोटों की प्रोसेसिंग के लिए इनको आधुनिकतम सुविधाओं से सुसज्जित किया जाएगा।

स्वच्छ नोट नीति

करेन्सी की मांग का अनुमान और आपूर्ति

VIII.5 अर्थमितीय मॉडल, जिसमें अन्य बातों के साथ-साथ जीडीपी में वास्तविक संवृद्धि अनुमानों, मुद्रास्फीति की दर और गंदे नोटों के मूल्यवर्ग-वार निपटान की दर को ध्यान में रखा जाता है, के

सारणी VIII.3: मार्च 2016 के अंत तक की स्थिति के अनुसार करेन्सी चेस्ट और छोटे सिक्कों के डिपो

श्रेणी	करेन्सी चेस्टों की संख्या	छोटे सिक्कों के डिपो की संख्या
1	2	3
भारतीय स्टेट बैंक (एस बी आई)	1,965	1,859
भारतीय स्टेट बैंक के सहयोगी बैंक	757	725
राष्ट्रीयकृत बैंक	1,173	993
निजी क्षेत्र के बैंक	160	156
सहकारी बैंक	3	3
विदेशी बैंक	4	4
क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक	5	5
राज्य कोष कार्यालय (एसटीओ)	7	0
भारतीय रिज़र्व बैंक	1	1
कुल	**4,075**	**3,746**

आधार पर रिज़र्व बैंक द्वारा मुद्रणालयों को बैंक नोटों के मुद्रण की मांग भेजी जाती है। वर्ष 2015-16 में आपूर्ति किए गए बैंक नोटों की कुल संख्या 2014-15 के 23.6 बिलियन नग से कम होकर 21.2 बिलियन नग हो गई, जबकि 2015-16 में 23.9 बिलियन नगों और 2014-15 में 24.2 बिलियन नगों की मांग भेजी गई थी (सारणीVIII.4)।

VIII.6 वर्तमान में प्रयोग किए जा रहे मांग अनुमान मॉडल को परिशुद्ध करने का कार्य भारतीय सांख्यिकी संस्थान (आईएसआई), कोलकाता को सौंपा गया है।

सारणी VIII.4: बीआरबीएनएमपीएल और एसपीएमसीआईएल द्वारा बैंकनोटों की मांग एवं आपूर्ति (अप्रैल से मार्च)

(मिलियन नग)

मूल्यवर्ग (₹)	2013-14		2014-15		2015-16		2016-17
	मांग	आपूर्ति	मांग	आपूर्ति	मांग	आपूर्ति	मांग
1	2	3	4	5	6	7	8
5	0	0	0	0	0	0	0
10	12,164	9,467	6,000	9,417	4,000	5,857	3,000
20	1,203	935	4,000	1,086	5,000	3,252	6,000
50	994	1,174	2,100	1,615	2,050	1,908	2,125
100	5,187	5,131	5,200	5,464	5,350	4,910	5,500
500	4,839	3,393	5,400	5,018	5,600	4,291	5,725
1,000	975	818	1,500	1,052	1,900	977	2,200
कुल@	**25,362**	**20,918**	**24,200**	**23,652**	**23,900**	**21,195**	**24,550**

@: कुल जोड़ में ₹1 शामिल नहीं है
बीआरबीएनएमपीएल : भारतीय रिज़र्व बैंक नोट मुद्रण प्राइवेट लिमिटेड।
एसपीएमसीआईएल : भारतीय प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड।

सारणी VIII.5: टकसालों द्वारा सिक्कों की मांग और आपूर्ति (अप्रैल- मार्च)

(मिलियन नग)

मूल्यवर्ग	2013-14		2014-15		2015-16		2016-17
	मांग	आपूर्ति	मांग	आपूर्ति	मांग	आपूर्ति	मांग
1	2	3	4	5	6	7	8
50 पैसे	50	40	40	20	40	30	30
₹1	5,418	3,092	6,000	3,247	6,100	3,753	6,300
₹2	3,546	2,424	4,000	2,367	4,000	2,899	4,200
₹5	1,819	1,393	2,000	1,091	2,100	1,492	2,270
₹10	1,200	728	1,800	1,187	2,000	1,084	2,200
कुल	**12,033**	**7,677**	**13,840**	**7,912**	**14,240**	**9,258**	**15,000**

VIII.7 सिक्कों की बढ़ती हुई मांग को पूरा करने के लिए टकसालों को भेजे जाने वाले वार्षिक मांगपत्र में विगत वर्षों में बढ़ोतरी होती रही है। वर्ष 2014-15 और 2015-16 में टकसालों को भेजे गए वार्षिक मांगपत्रों में क्रमशः 57 और 65 प्रतिशत की आपूर्ति प्राप्त हो सकी (सारणी VIII.5)। टकसालों से अनुरोध किया गया है कि बढ़ती हुई मांग को पूरा करने के लिए उत्पादन को बढ़ाया जाए।

गंदे नोटों का निपटान

VIII.8 वर्ष 2015-16 के दौरान 16.4 बिलियन नग के गंदे नोटों को निपटान किया गया जबकि लक्ष्य 17.1 बिलियन नगों का रखा गया था (सारणी VIII.6)।

सारणी VIII.6: गंदे बैंक नोटों का निपटान (अप्रैल - मार्च)

(मिलियन नग)

मूल्यवर्ग (₹)	2013-14	2014-15	2015-16
1	2	3	4
1,000	511	663	625
500	2,405	2,847	2,800
100	4,972	5,173	5,169
50	1,398	1,271	1,349
20	725	801	849
10	4,128	4,338	5,530
5 तक	48	44	46
कुल	**14,187**	**15,137**	**16,368**

जाली नोट और प्रतिभूति मुद्रण

बैंकिंग प्रणाली में पाई गई प्रवृत्तियां

VIII.9 बैंकिंग प्रणाली में वर्ष के दौरान 632,926 नग जाली नोट पकड़े गए जिनमें से 95 प्रतिशत जाली नोट वाणिज्य बैंकों ने पकड़े (सारणी VIII.7)। वर्ष 2015-16 में ₹100 और ₹1,000 मूल्यवर्ग के पकड़े गए जाली नोटों में बढ़ोतरी हुई (सारणी VIII.8)।

सारणी VIII.7: पकड़े गए जाली नोटों की संख्या (अप्रैल से मार्च)

(नगों की संख्या)

वर्ष	रिजर्व बैंक में पकड़े गए	अन्य बैंक	कुल
1	2	3	4
2013-14	19,827	468,446	488,273
	(4.1)	(95.9)	(100.0)
2014-15	26,128	568,318	594,446
	(4.4)	(95.6)	(100.0)
2015-16	31,765	601,161	632,926
	(5.0)	(95.0)	(100.0)

टिप्पणी : 1. कोष्ठकों में दिए गए आंकड़े कुल में प्रतिशत हिस्सा दर्शाते हैं।

2. पुलिस और अन्य प्रवर्तन एजेन्सियों द्वारा पकड़े गए जाली नोट शामिल नहीं किए गए हैं।

सारणी VIII.8: बैंकिंग प्रणाली में मूल्यवर्ग के अनुसार पकड़े गए जाली नोट
(अप्रैल-मार्च)

(नगों की संख्या)

मूल्यवर्ग (₹)	2014-15			2015-16		
	जाली नोटों की संख्या	संचलन में नोट	एनआईसी के समानुपात में एफआईसीएन	जाली नोटों की संख्या	संचलन में नोट	एनआईसी के समानुपात में एफआईसीएन
1	2	3	4	5	6	7
2 और 5	0	11,672,000,000	0	2	11,626,000,000	0
10	268	30,304,000,000	0.00000001	134	32,015,000,000	0
20	106	4,350,000,000	0.00000002	96	4,924,000,000	0
50	7,160	3,487,000,000	0.00000205	6,453	3,890,000,000	0.0000017
100	181,799	15,026,000,000	0.00001210	221,447	15,778,000,000	0.000014
500	273,923	13,128,000,000	0.00002087	261,695	15,707,000,000	0.0000167
1000	131,190	5,612,000,000	0.00002338	143,099	6,326,000,000	0.0000226
कुल	**594,446**	**83,579,000,000**	**0.00000711**	**632,926**	**90,266,000,000**	**0.000007**

एफआईसीएन : जाली भारतीय करेन्सी नोट । एनआईसी : परिचालनगत नोट।
टिप्पणी : पुलिस और अन्य प्रवर्तन एजेन्सियों द्वारा पकड़े गए जाली नोट शामिल नहीं किए गए हैं।

सन् 2005 से पहले की श्रृंखला के बैंकनोटों को वापस लेना और प्रतिभूति मुद्रण पर व्यय

VIII.10 सन् 2005 से पहले की श्रृंखला के बैंकनोटों को वापस लेने की प्रक्रिया वर्ष 2013 में आरंभ हुई थी। यह कार्य चरणबद्ध रूप से किया गया ताकि जनता को परेशानी से बचाया जा सके। अब 1 जुलाई 2016 के बाद सन् 2005 से पहले की श्रृंखला वाले बैंकनोटों को बदलने की सुविधा केवल रिज़र्व बैंक के निर्गम कार्यालयों में (कोच्चि सहित) ही मिल सकेगी। सन् 2005 से पहले के बैंकनोटों की वैध-मुद्रा होने की स्थिति अपरिवर्तित बनी रहेगी।

VIII.11 वर्ष 2015-16 (जुलाई-जून) के दौरान प्रतिभूति मुद्रण पर किया गया कुल व्यय ₹34.2 बिलियन रहा, जबकि 2014-15 के दौरान यह व्यय ₹37.6 बिलियन रहा था।

मुद्रा प्रबन्ध विभाग

VIII.12 मुद्रा प्रबंधन केन्द्रीय बैंकिंग कार्यों में प्रमुख कार्य है। मुद्रा प्रबंध विभाग जनता की तरफ से नोटों और सिक्कों की जायज मांग को पूरा करने में अहम भूमिका निभाता है। बैंकनोटों के उत्पादन को देश में ही करने और उनमें सुरक्षा संबंधी विशेषताओं को समाहित करने का कार्य और साथ ही बैंकनोटों के जीवन-काल को बढ़ाना विभाग के महत्वपूर्ण कार्यों में है। वर्ष 2015-16 के दौरान इस विभाग ने बेहतर ग्राहक सेवाएं देने के साथ-साथ बैंकनोटों के जीवन-काल को बढ़ाने के प्रयास किए।

वर्ष *2015-16* के लिए कार्यसूची : कार्यान्वयन की स्थिति

प्लास्टिक के बैंकनोट

VIII.13 सभी उपलब्ध प्लास्टिक अधस्तरों (सब्स्ट्रेट) पर ₹10 मूल्यवर्ग के एक बिलियन बैंकनोटों का मुद्रण करके पाँच अलग-अलग मौसम वाले नगरों यथा कोच्चि, मैसूर, शिमला, जयपुर और भुवनेश्वर के लोगों को प्रयोग के तौर पर जारी किए गए थे। भारतीय रिज़र्व बैंक नोट मुद्रण प्राइवेट लिमिटेड (बीआरबीएनएमपीएल) और भारतीय प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड (एसपीएमसीआईएल) इस परियोजना पर कार्य कर रहे हैं।

ग्राहक सेवा

VIII.14 बैंक शाखाओं द्वारा जनता के लोगों को नोटों और सिक्कों की आपूर्ति करने और इनका विनिमय करने हेतु कुशल सेवाएं प्रदान करने के लिए वर्ष 2008 में रिज़र्व बैंक ने करेन्सी चेस्टों सहित बैंक शाखाओं के लिए प्रोत्साहन और जुर्माने की योजना प्रारंभ की थी और इसे वर्ष 2014-15 में भी लागू रखा गया। वर्ष 2015-16 के दौरान रिज़र्व बैंक ने इस योजना की समीक्षा की और कुछ प्रोत्साहनों में संशोधन किया और जुर्माने तथा प्रोत्साहनों को अलग-अलग

बाक्स VIII.1

बैंकनोट : नम्बरों की नई पद्धति और दृष्टिबाधितों के लिए सुविधायुक्त नोट

वर्ष 2015-16 के दौरान रिज़र्व बैंक ने महात्मा गांधी श्रृंखला 2005 के 20 रुपये के बैंकनोट को छोड़कर सभी मूल्यवर्ग के बैंकनोटों के नंबरों के लिए नई पद्धति का प्रयोग करते हुए बैंकनोट जारी किए। दोनों नम्बर पैनलों में अंकों का आकार बाएं से दाहिने की तरफ बड़ा होता जाता है, जबकि आरंभ के प्रथम तीन वर्णांकों (उपसर्ग) का आकार एकसमान रखा गया है। अंकों को बढ़ते हुए आकार में मुद्रित करने से यह सुरक्षा लक्षण एक दृश्यमान सुरक्षा लक्षण बन जाता है, जिसकी सहायता से जनता असली भारतीय बैंकनोट और जाली बैंकनोट के बीच आसानी से अंतर कर सकेगी, इस प्रकार यह जालसाजी के खिलाफ सुरक्षा भी प्रदान करती है।

कुछ अतिरिक्त विशेष फीचर्स भी ₹100, ₹500 और ₹1,000 मूल्यवर्ग के नोटों में आरंभ किए गए हैं, जैसे कि संरूपित रेखाएं और दृष्टिबाधित लोगों के लिए विद्यमान फीचर में बढ़ोतरी करना। आसानी से पहचान में आने के लिए ₹100, ₹500 और ₹1,000 मूल्यवर्ग के नोटों में पहचान संकेतों (वृत्त, त्रिभुज और हीरक) को 50 प्रतिशत बड़ा कर दिया गया है। कोणीय संरूपित रेखाएं भी आरंभ की गई हैं: ₹100 के बैंकनोट में 2 खंडों में 4 लाइनें, ₹500 के बैंकनोट में 3 खंडों में 5 लाइनें, और ₹1000 के बैंकनोट में 4 खंडों में 6 लाइनें रखी गई हैं। इसके अलावा ₹100, ₹500 और ₹1000 मूल्यवर्ग के बैंकनोटों का डिजाइन उसी प्रकार का है जो वर्तमान में महात्मा गांधी श्रृंखला 2005 के बैंकनोटों का है। पूर्व में जारी इन मूल्यवर्गों के सभी बैंकनोट, जिनमें ये फीचर्स नहीं हैं, की वैध मुद्रा होने की स्थिति अपरिवर्तित बनी रहेगी।

किया गया। नई स्कीम - 'करेन्सी वितरण और विनिमय योजना' (सीडीईएस) में संशोधित प्रोत्साहनों का समावेश किया गया है जो स्वच्छ नोट नीति की तरह से ही बैंकनोटों के विनिमय में बैंकों के लिए सुविधा प्रदान करेगी। रिज़र्व बैंक में एक आंतरिक समूह द्वारा रिज़र्व बैंक (नोट वापसी) नियमावली, 2009 की समीक्षा की जा रही है। विभिन्न केन्द्रीय बैंकों में इनवेन्ट्री प्रबंधन की उच्चस्तरीय व्यवस्था से प्रेरणा लेते हुए रिज़र्व बैंक के नए केन्द्रों पर यन्त्रचालित वाल्टों की व्यवस्था करते हुए पायलट आधार पर वाल्ट ऑटोमेशन की प्रक्रिया आरंभ की गई है, साथ ही बेलापुर (मुंबई) में विद्यमान वाल्ट का भी ऑटोमेशन किया जा रहा है।

वर्ष 2016-17 के लिए कार्यसूची

VIII.15 समस्त विश्व के केन्द्रीय बैंक बैंकनोटों में सुरक्षा फीचरों को आवधिक तौर पर बदलते रहने की मानक व्यवस्था को अपनाते हैं ताकि जालसाजों से आगे रहा जा सके। भारत में इस प्रकार का विगत बदलाव बैंकनोटों की नई 2005 श्रृंखला के साथ वर्ष 2005 में किया गया था, 2015-16 के दौरान संरूपित रेखाएं और वर्धमान आकार वाले नंबर जैसे कतिपय नए फीचर डालने की शुरूआत की गई (VIII.1)। इसके अतिरिक्त, भारत सरकार ने भारतीय बैंकनोटों के लिए नए सुरक्षा फीचरों की सरकारी खरीद हेतु अनुमोदन प्रदान किया। नए सुरक्षा फीचरों की सरकारी खरीद की प्रक्रिया चल रही है जबकि नए डिजाइन वाले बैंकनोटों की शुरुआत करने का भी प्रस्ताव है।

भारतीय रिज़र्व बैंक नोट मुद्रण प्राइवेट लिमिटेड (बीआरबीएनएमपीएल)

VIII.16 भारतीय रिज़र्व बैंक नोट मुद्रण प्राइवेट लिमिटेड (बीआरबीएनएमपीएल) नामक संस्था रिज़र्व बैंक के पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक संस्था है जो मैसूर और सालबोनी में बैंकनोट मुद्रण के दो मुद्रणालयों का संचालन करती है। यह प्रस्ताव किया गया है कि 'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम के एक हिस्से के तौर पर बीआरबीएनएमपीएल के भीतर ही स्याही का निर्माण करने वाली एक यूनिट स्थापित की जाए।

VIII.17 वर्ष 2015-16 में बीआरबीएनएमपीएल ने विभिन्न मूल्यवर्गों में बैंकनोटों के 14,714 मिलियन नगों का उत्पादन किया जबकि वार्षिक लक्ष्य 15,700 मिलियन नगों का रखा गया था। बीआरबीएनएमपीएल और एसपीएमसीआईएल ने संयुक्त उद्यम के तौर पर बैंक नोट पेपर मिल इंडिया प्रा. लिमिटेड (बीएनपीएमआईपीएल) की स्थापना मैसूर में की गई है, इसकी उत्पादन क्षमता 12,000 मिलियन टन है और इस मिल ने उत्पादन-कार्य आरंभ कर दिया है। नए बैंकनोटों के उत्पादन का स्वदेशीकरण करने की तरफ यह एक बड़ा कदम है।